स्वयं ही स्वयं का सुरक्षा कवच...

सत्तायें तब कायम होती हैं, जब कोई उन्हें स्वीकार कर ले। उनका खामोश मुहाफिज़ बन जाये। और यदि ऐसा न करना हो, अपने मान की समझ विकसित करनी हो, तो अपना रक्षक आपको स्वयं बनना होगा..।

महिला दिवस आया। पूरी दुनिया ने महिलाओं की समस्याओं, उनकी उपलब्धियों, उनके योगदानों की चर्चा की। लकीर के भीतर खड़ी वे हँसी, चिंतामग्न हुईं या हौसले भरीं, तो कभी उपलब्धियों की सराहना पर मुट्ठियाँ बांधीं। पर लकीर तो है। प्रमाण महिला दिवस खुद है। अपने हिस्से में एक दिन देखकर आह्लादित हो, आगे बढ़ गए, तो पहचान के बारे में सोचने का एक और मौका खो देंगे। हर मामले में आगे बढ़ने के लिए, हर क्षेत्र में एक कदम की भी पहल के लिए 'स्त्री' के तौर पर देखे जाने को नकारने का यह सही वक्त है। महिला उद्यमी, महिला प्रोफेशनल, महिला ये, महिला वो... केवल उद्यमी नहीं हो सकते? अलग पहचान देना, अलग कर देने की पहली साज़िश है। और जो अलग होता है, उसके लिए नियम-कायदे, सब अलग होते हैं। खास कहकर, कैसे हाशिए पर धकेल दिया जाता है, स्त्री जगत इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

घर-परिवार-समाज का हर काम औरत के ज़िम्मे है। कृपया सोचिए, ऐसा क्या है जो पुरुष के हिस्से में रखा गया हो। फिर भी स्त्री की कोई मुकम्मल पहचान नहीं है। क्योंकि ऐसा वह खुद चाहती है। श्रेय लेना नहीं आता, तो कोई बात नहीं, पर स्त्री को अपने हिस्से में खुशियाँ और मान रखना भी नहीं आता। जहाँ मौका मिलता है, खुद को मिटाने को तत्पर हो जाती है। त्याग करने को अपना पदक मान रखा है। और अगर कोई स्त्री अपने योगदान को लेकर ज़रा-सी भी

सजग हो जाए, किसी के लिए अपने हिस्से की कुर्बानी न दे, तो उसकी लानत-मलामत करने में स्त्रियाँ ही हैं। **लेखक श्रीमोई के शब्दों में - पुरुष सत्ता की सबसे बड़ी मुहाफिज़ स्त्री है।** आश्चर्य होता है कि सदियों से स्त्री, पुरुष की ज़बान बोलती आई है। बात बेटी की हो, सास की, माँ की, बहू की या बहन की, उसने कभी अपना कोई नज़रिया बनाया ही नहीं। पुरुष सत्ता ने जो लकीरें खींच दीं, उनके भीतर रहने को उसने अपनी नियति मान लिया। आदमी को कभी खुद को साबित नहीं करना पड़ता, फिर क्यों स्त्री को हर कदम पर ऐसा करना पड़ता है? स्मरण रहे, मान केवल उसी का होता है, जिसके योगदान को अहम माना जाए। केवल साथी अपनी राय दे सकते हैं। कमतर समझे जाने वाले हुकुम बजा लाते हैं, तर्क (बहस) नहीं करते। जो खुद को कुछ नहीं समझता, उसे कोई और क्यों कुछ समझेगा।

ग़ौर कीजिएगा, अगर स्त्री को एक अलग जन्म मिला है, अलग पहचान मिली है, तो उसका एहसास क्यों नहीं है उसे? अगर दुनिया में उसकी जगह न होती, तो स्त्री होती ही क्यों? सब पुरुष ही न होते? कहते ही हैं न कि प्रकृति में कुछ भी अतिरिक्त या बेमानी नहीं है। अपने आपको लकीर के इस तरफ खड़े करना छोड़ दें। लड़की होने का नहीं, इंसान होने का उत्सव मनाएं। अपनी पहचान का, अपने खास स्वरूप का आनंद मनाएं। किसी से होड़ नहीं है, हम हैं ही खास।

सारी स्त्रियाँ इसको लेकर एकराय हो जाएं, एकमत हो जाएं, एकजुट हो जाएं, तो कौन है जो हमारे अधिकार के सच को झुठला सके। कुदरत की हर नेमत की तरह, ज़िन्दगी के हर तौर-तरीके पर स्त्री का पूरा हक है। अपना मान समझें, अपनी बेटियों का मान करें, घर-परिवार में बतौर इंसान, बतौर सदस्य अपने मायने समझें और इस दुनिया में अपनी मौजूदगी को लेकर उसी तरह आनंदित हों, जैसे कि आपका सहयात्री प्राणी, पुरुष होता आया है। - रचना समंदर।

महिला व्यवसायी नहीं, सिर्फ व्यवसायी कहो

यह एक सुखद बदलाव माना जाता है कि भारत आज तरक्की कर रहा है। उस तरक्की में महिलायें भी रुचि दिखा रही हैं। लेकिन इस रुचि के बावजूद भी उनको एक अलग तबके का मानकर उन्हें आज भी एक अलग नज़रिये से देखा जाता है। कहते हैं.. अरे, अब महिलायें भी व्यवसायी बन रही हैं, ये तो बहुत बड़ा बदलाव है आने वाले समय के लिए। अब ये बात कुछ गले से नहीं उतरती। भई क्यों? महिलायें व्यवसायी क्यों नहीं बन सकतीं? मतलब ये नहीं हैं तो 'बदलाव' नहीं है। अब ये आ गईं तो व्यवसाय पता नहीं तरक्की करेगा या नहीं करेगा, वाली स्थिति है।

आज अमेरिका, ब्रिटेन में भी महिलायें व्यवसाय से जुड़ तो गईं हैं, लेकिन वे संघर्ष कर रही हैं। दूसरे देशों के मुकाबले भारत में ज़रूर व्यवसाय करने में महिलाओं का

योगदान बढ़ा है, लेकिन आज भी वेतन को लेकर उन्हें पुरुषों से कम या ज़रूरतों को लेकर वेतन दिया जाता है। तो अब ये आप सशक्त कर रहे हैं, व्यवसाय से महिला सशक्त हो रही है या डर बढ़ता जा रहा है कि क्या हम महिला हैं इसलिए तो पक्षपात नहीं हो रहा।

अगर किसी भी व्यवसायी को आप ध्यान से देखें तो कहते हैं कि वो बिज़नेसमैन बहुत अच्छा है। लेकिन कोई महिला उद्यमी हो, तो उसको बिज़नेस वुमेन कहते हैं। हम शब्दों से ही दायरे सीमित कर देते हैं। क्या हम कभी कहते हैं कि पुरुष उद्यमी (मेन एन्टरप्रेन्योर)? लेकिन हम महिला उद्यमी कहते हैं। ऐसा क्यों। हम सिर्फ उद्यमी हैं, व्यवसायी हैं, महिला या पुरुष नहीं हैं। हमें सिर्फ उद्यम की श्रेणी में रखा जाना चाहिए।

महिलायें रचनात्मक होती हैं। लेकिन चौंकाने वाली बात है कि शादी के बाद 48% महिलायें अपना काम छोड़ देती हैं। उसमें कारण बनता है पारिवारिक ज़िम्मेवारी। इसी बंधन के कारण उसकी रचनात्मकता घट जाती है और कुछ दिनों में उसे वो स्थान छोड़ना पड़ता है। रचनात्मकता और उत्पादकता की असीम संभावनायें महिलाओं में मौजूद हैं, बशर्ते हम खुद को कमज़ोर महसूस करना बंद कर दें। बस हमें अपने आप को कमज़ोर न समझ आगे बढ़ते जाना है, और उस बात को स्वीकार करना है जो समाज के दायरे से थोड़ा सा अलग है। संतुलन का नियम भी यही कहता है। तो आओ, हाथ से हाथ मिलाकर इन महिलाओं को हम तरक्की की ओर बढ़ने दें, उन्नति करने दें।

स्रोत - मधुरिमा

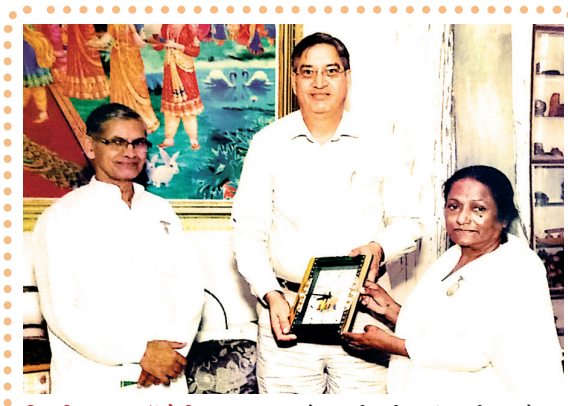

दिल्ली-पालम कॉलोनी। अवतार चन्द्र डोगरा, पीठासीन अधिकारी, उपभोक्ता न्यायालय,जिला न्यायालय कड़कड़डुमा के सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज।

वडोदरा-अलकापुरी(गुज.)। विश्व महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए म्युनिसिपल काउंसलर राधिका भट्ट, भाजपा शहरी कारोबारी सगुण भट्ट, नुपुर नर्सिंग अकादमी के प्रिंसिपल गीता मर्च, ब्र.कु. मीना व अन्य।

अम्बिकापुर-छ.ग.। महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सरगुजा वनमण्डलाधिकारी प्रियंका पाण्डे, डेप्युटी कलेक्टर नयनतारा, होलीक्रॉस हॉस्पिटल की प्रशासिका सिस्टर डायना, श्री साईं बाबा आदर्श विद्यालय की प्राचार्या वर्णाली घोष, वसुधा महिला मंच की अध्यक्षा वंदना दत्ता, ब्र.कु. विद्या, ब्र.कु. रूपा तथा अन्य।

पन्ना-म.प्र.। महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए लिसीएक्स आनन्द स्कूल की प्रिंसिपल सिस्टर रीना व प्रिंसिपल फिल्सी, गवर्नमेंट एच. एस. स्कूल की प्रिंसिपल निशा जैन, वुमेन एसोसिएशन की डिस्ट्रिकट चेयरमैन आशा गुप्ता, जिला जज की धर्मपत्नी शिखा कोस्ठा तथा ब्र.कु. सीता।

नज़रबाग कॉलोनी-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से दायें - गर्ल्स कॉलेज समिति की सदस्य सपना दुबे, ब्र.कु. सीमा, भाजपा प्रकोष्ठ की प्रदेश सहसंयोजक एवं जन भागीदारी समिति की अध्यक्षा अनीता कटारिया, समाजसेवी डॉ. संध्या उपाध्याय तथा बी.एच. एम.एस. होम्योपैथी डॉ. ब्र.कु. बरखा।

जोधपुर-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'संस्कृति की संरक्षक महिला' विषयक कार्यक्रम में बायें से मंचासीन सहायक पुलिस आयुक्त स्वाति शर्मा, भाजपा से ललिता सुखनानी, सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शील, ब्र.कु. फूल, डॉ. प्रो. सरोज, लेखिका लीला साधवानी तथा डॉ. कृति भारती।